B.A.-I / I[st] Paper (2011-2012)

~~स्पष्ट~~ M.M. 50

प्रथम प्रश्न-पत्र : **संगीत शास्त्र** (संगीत शास्त्र)

गायन एवं तबलवादन

1. भातखण्डे पद्धति तथा विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धति का विस्तृत अध्ययन।

2. हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटकी ताल एवं स्वर पद्धतियों में अन्तर।

3. भारतीय संगीत में प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक विद्वानों का योगदान।

4. धुन और संवाद। (Harmony - Melody)

5. राग वर्गीकरण, रागांग पद्धति, राग–रागिनी वर्गीकरण, भरत मत, शिवमत, हनुमत मत, कल्लिनाद मत।

6. पं0 श्री निवास के अनुसार वीणा के तारों पर स्वरों की स्थापना।

7. अपने वाद्य की संरचना एवं मिलाने की विधि।

8. भारतीय संगीत के पूर्व विद्वानों का जीवन परिचय एवं संगीत में योगदान। भरत मुनि, शारगंदेव, विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, ओंकारनाथ ठाकुर।

9. संगीत से संबंधित सामान्य रूचि के विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध।

10. संगीत, श्रुति, स्वर, सप्तक, थाट, नाद, ध्वनि, राग, लय इत्यादि का अध्ययन।

(कल्पना एस. बर्मन)
संगीत विभागाध्यक्षा
सदस्या, पाठ्यक्रम समिति
डॉ. रा. मे. लो. अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद

B.A.-I / II[nd] Paper

M.M. 50

द्वितीय प्रश्न-पत्र राग तथा ताल आदि का अध्ययन

1. शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण राग।

2. गीत, गांधर्व, गान, देशी संगीत, मार्ग संगीत।

3. निम्न रागों का पूर्ण परिचय, विशेषताओं सहित एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन।

   विस्तृत राग – राग जयजयवन्ती, राग गौड़ सारंग, राग बागेश्री, राग छायानट।

   गौण राग – राग देशकार, राग कामोद, राग बहार, राग सोहनी, राग पूरिया, राग रामकली।

4. उपर्युक्त रागों को स्वर समूहों द्वारा पहचानने की क्षमता, रागों की स्वरलिपि एवं ध्रुपद, धमार एवं तराना की स्वरलिपि कंठस्थ कर लिखने की क्षमता तथा ध्रुपद, धमार की स्वरलिपि लयकारी सहित लिखने की क्षमता।

5. निम्न तालों का ठेका लयकारी सहित लिखने की क्षमता, हाथ से ताली लगाने का ज्ञान एवं तालों को, बोल द्वारा पहचानने की क्षमता – तीनताल, झप ताल, तिलवाड़ा, एक ताल, चार ताल, आड़ा चार ताल, धमार ताल एवं दादरा ताल।

6. पारिभाषिक शब्द –वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, पूर्वांग, उत्तरांग, न्यास, अल्पत्व, बहुत्व, तिरोभाव, आविर्भाव, स्थाई, अंतरा।

   गायन शैलियाँ – ख्याल, ध्रुपद, धमार, तराना।

(अल्पना रस्तोगी)

B.A.-I

M.M. 100

क्रियात्मक
संगीत गायन

1. परीक्षार्थी को निम्नलिखित रागों में से प्रत्येक में, एक–मध्य लय या द्रुत लय का ख्याल तथा विस्तृत अध्ययन वाले चारों रागों – राग छायानट, गौड़ सारंग, बागेश्री तथा जयजयवंती में एक–एक विलम्बित ख्याल तथा द्रुत ख्याल सीखना अनिवार्य है।

   गौण राग – राग देशकार, सोहनी, पूरिया, कामोद, बहार, रामकली। उक्त रागों में से एक ध्रुपद, एक धमार व एक तराना तथा किसी एक राग में भजन या ठुमरी सीखना होगा।

2. परीक्षार्थी को निम्न तालों का सामान्य ज्ञान होना चाहिये – तीन ताल, तिलवाड़ा, चौतातात, आड़ा चार ताल, झपताल, एक ताल, धमार तथा दादरा।

(ख) ताल वाद्य(तबला, पखावज) में से कोई एक वाद्य लिया जा सकता है।

B.A.-I -(2011- 2012)

प्रथम प्रश्न पत्र

पूर्णांक– 50

संगीत शास्त्र एवं संगीत का इतिहास

1. विभिन्न प्रकार के अवनद्ध वाद्यों का ज्ञान एवं उनका उपयोग।
2. ताल एवं उसके 10 प्राणों की परिभाषा एवं उनका उपयोग।
3. तबला एकल (सोलो) तथा तबलासंगत में अन्तर ओर सिद्धान्त।
4. तबला और पखावज के वर्ण ओर उनको बजाने की विधि।
5. तबला तथा पखावज का इतिहास और उनके विभिन्न बाज।
6. संगीत सम्बन्धी सामान्य रूचि के विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध।

द्वितीय प्रश्न पत्र– तालों का अध्ययन

पूर्णांक -50

1. निम्नलिखित परिभाषिक शब्दों की परिभाषा –
ताल, लय, मात्रा, सम, खाली, भरी, ठेका, आवृत्ति, बाँट, टुकड़ा, मुखड़ा, मोहरा, तिहाई
2. विभिन्न लयकारियों में (दुगुन, तिगुन,आड़ि, कुआड़ी आदि) प्रयोगात्मक पाठ्यक्रमों में निर्धारित तालों की स्वरलिपि।
3. समान मात्रा के तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
4. तबला तथा पखावज का तुलनात्मक अध्ययन।
5. प्रयोगात्मक पाठ्यकम में निर्धारित तालों का वर्णन तथा उसका तुलनात्मक अध्ययन।
6. दिये हुए बोल समूहों द्वारा तालों को पहचानन की क्षमता।
7. निम्नलिखित परिभाषिक शब्दों की परिभाषा–
आवृत्ति, नाद, श्रुति, सप्तक, थाट, राग, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, चक्करदार, जाति, प्रबन्धगान फर्शबन्दी, उठान, ग्रह।
8. निम्नलिखित, संगीतकारों तथा भारतीय संगीत आचार्यो (विद्वानों) का जीवनपरिचय तथा संगीत में योगदान–
अनोखेलाल, कंठे महराज, अहमद जान थिरकवा, कुदऊ सिंह, नाना-पानसे, हबीबुद्दीन।

(कल्पना एस. बर्मन)

प्रयोगात्मक

(स) केवल तबला व परखावजके लिए– पूर्णांक–100

तबला– परीक्षार्थीयों को निम्नलिखित तालों का अभ्यास करना चाहिए।

1. त्रिताल, झपताल, और रूपक (पेशकार, कायदा,गत टुकड़ा,रेला,परन, कमाल की परन,फरमायशी परनं के साथ।)
2. चौताल और तिवरा–ठेका ओर परन, लयबॉट जैसा परखावजमे प्रयुक्त होता है।
3. कहरवा और दादरा की लग्गी बांट और प्रकार।

परखावज :– परीक्षार्थियों को निम्नलिखित तालों में से प्रत्येक में ठेका परन, तथा लयवाँट सीखना चाहिए।

तबला परखावज लेने वाले परीक्षार्थियो के इन बाद्यों को अकेले संगत , मे बजाने की क्षमता होनी चाहिए, उनमें अपने वाद्य पर बजाये जाने वाले बोलों को हाथ से लय (सम,खाली आदि) का ध्यान रखते हुए कहने की योग्यता आवश्यक है, उन्हे वाद्य मिलना भी आना चाहिए।

(कल्पना एस० बर्मन)